प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2023, प्रेषण तिथि : 04 जून, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पाक्षिक

पथ-प्रेरक

वर्ष 27 | अंक 06 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जयपुर के भवानी निकेतन में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर जयपुर के भवानी निकेतन प्रांगण में न्यू पोलिटेकनिक महाविद्यालय में संपन्न हुए। युवकों का ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर 18 से 29 मई तक संपन्न हुआ जिसमें कुल 575 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन संघ के संरक्षक श्री माननीय भगवानसिंह जी रोलसाबसर के मार्गदर्शन में संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास ने किया। युवतियों का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 29 मई तक इसी परिसर में स्थित छात्रावास में संपन्न हुआ जिसमें में 200 युवतियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। युवतियों के शिविर का संचालन रश्मि कंवर देलदरी ने मातृशक्ति विभाग के प्रभारी जोरावर सिंह जी भादला के निर्देशन में किया। इन शिविरों में प्रवचनों, चचाओं, खेलों आदि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से संघ दर्शन का अभ्यास करवाया गया।

संघ प्रेम का घर है, इसमें गहरा पैठना पड़ेगा: संरक्षक श्री

(श्री भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर में माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रदत्त स्वागत उद्बोधन)

रहिमन यह घर प्रेम का,
खाला का घर नाहिं।
शीश उतारे हाथ धरि,
सो पैठे घर मांहि॥

रहीम के इन वचनों से समझा जा सकता है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ क्या है। संघ प्रेम का घर है लेकिन इस घर में प्रवेश आसान नहीं है। जो अपने समाज, धर्म, राष्ट्र और संपूर्ण मानवता के प्रति अपना जीवन समर्पित कर देते हैं वे ही संघ को समझ सकते हैं और इस घर में प्रवेश कर सकते हैं। केवल उछल कूद, केवल प्रदर्शन से संघ समझ में नहीं आ सकता, इसमें गहरा पैठना पड़ेगा। अपने आप को भूल कर इस घर में जो आता है, उसी का जीवन संवरता है। संघ का होकर ही संघ को समझा जा सकता है। यह मात्र सामाजिक कार्य नहीं है, ना ही यह मात्र संगठन का कार्य है। संघ किसी के विरुद्ध भी नहीं है, वह केवल उन बुराइयों के विरुद्ध है जिनसे संसार त्रस्त है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने जयपुर के भवानी निकेतन परिसर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर के शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि परमसत्ता ने हमें यह जीवन प्रदान किया है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'श्रेष्ठ बंधनों को बाध रहा हैं संघ'

(बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन)

भवानी निकेतन, जयपुर में बालिकाओं का सात दिवसीय माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 29 मई तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला के निर्देशन में रश्मि कंवर देलदरी द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बालिकाओं का स्वागत करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ बार-बार शिविरों का आयोजन करके हमें बुला रहा है। इसका कारण क्या है, इस पर हमें विचार करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जयपुर के भवानी निकेतन में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

'साधना पथ' के लिए पाथेय का संचय

श्री क्षत्रिय युवक संघ के साधना मार्ग पर अग्रसर साधकों के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा लिखी गई पुस्तक 'साधना-पथ' गूढ़तम मार्गदर्शन का स्रोत है। उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी द्वारा पुस्तक के अवतरणों को स्वयंसेवकों को समझाया गया जिससे यह शिक्षण साधना पथ पर साधकों के लिए पाथेय के रूप में संचित हो सके। प्रतिदिन बौद्धिक सत्र के समय हुई इस चर्चा में बताया गया कि बलिदान का सिद्धांत ही क्षात्र परंपरा का मूल आधार रहा है और वही सिद्धांत हमारी साधना का भी मूलाधार है। बलिदान ही क्षात्र परंपरा में हमारे प्रवेश का मार्ग है। व्यथा बलिदान की प्रेरणा देती है, बलिदान ही साधक को नवचेतना का उपयुक्त आधार बनाता है। कर्म का मर्म समझ कर अपनी क्षमताओं पर विश्वास करते हुए आसक्तियों का त्याग कर आत्मनियंत्रण, नीरवता, दृढ़ता, संघर्षशीलता जैसे गुणों को धारण कर जो साधक आगे बढ़ता है उसी के भीतर सत्य की ज्योति प्रकाशित होती है। ऐसा सत्यनिष्ठ साधक ही अपने समष्टिगत उत्तरदायित्व को पहचान कर स्वयं को समाज सापेक्ष बनाता है। अपनी कर्मकुशल तेजस्विता से ऐसा साधक अन्य साधकों को भी साधना पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करता है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

अर्थबोध में जाना सहगीतों का भावार्थ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा लिखित और झनकार में संकलित विभिन्न सहगीतों का भावार्थ 'अर्थबोध' सत्र में किया गया। 19 मई को 'कदम तुम्हारे' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, हमें ही उसके साथ अपने कदम बढ़ा कर चलना होता है और मंजिल तक पहुंचना होता है। 20 मई को 'दिया जले' सहगीत पर चर्चा हुई जिसमें समाज की वर्तमान स्थिति के कारणों और उन कारणों के निवारण के पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए मार्ग पर चर्चा हुई। 21 मई को 'देता रहे जीवन ज्योति' गीत के माध्यम से कर्त्तव्य पथ पर सर्वस्व अर्पित करके बिना शिकायत चलते रहने की बात कही गई। 22 मई को 'हंसती है जग की होनी' गीत पर चर्चा में बताया गया कि संसार का भाग्य बदलने के लिए साहस, उत्साह और जीवटता से भरे मतवालों की आवश्यकता होती है, कायरों से कोई बदलाव नहीं आया करता। 23 मई को 'मेरा मस्तक' गीत पर चर्चा में पूज्य केसरिया ध्वज की महानता का चित्रण किया गया। 24 मई को 'हृदय की आग' गीत पर चर्चा में लोगों द्वारा लगाए आक्षेपों से अविचलित रहकर अपने लक्ष्य के लिए समर्पण और अनन्यता का भाव रखने की बात कही गई। 25 मई को 'चिता जल रही है' गीत के द्वारा साधना पथ में आने वाली चुनौतियों के प्रति सचेत किया गया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

प्रभात संदेश

माननीय संरक्षक महोदय द्वारा उच्च प्रशिक्षण शिविर में प्रदत्त प्रभात संदेश का सार संक्षेप

19 मई: हमारे ऋषियों ने जो अनुभव किया वह उन्होंने उपनिषदों में लिखा। उन्होंने बताया कि सत्य और ज्ञान हिरण्यमय पात्र से ढका हुआ है। हमारे प्राकृत मन और बुद्धि में इस आवरण को हटाने का सामर्थ्य नहीं है। इसे हटाने का उपाय है शिशुभाव। जिस प्रकार एक बालक अपने माता-पिता, गुरु आदि पर भरोसा करके स्वयं को उनके हाथों में सौंपकर निश्चिन्त रहता है, उसी प्रकार हम भगवान पर विश्वास करके अपने आप को उसे सौंप दे, तो ही सत्य और ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा दी गई साधना पद्धति के मार्ग पर चलकर हम भी सत्य और ज्ञान को अपने जीवन में उपलब्ध कर सकते हैं।

20 मई: *'ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥'* ईशोपनिषद के इस मंत्र में 'वह' पुरुष को कहा गया है और 'यह' प्रकृति को कहा गया है। ये दो भासित होते हैं लेकिन हैं एक ही। जो पूर्ण है वह सत्य है और पूर्ण केवल परमात्मा है। संघ में हम सत्य को खोजने आए हैं। जिन्होंने खोजा, उन्होंने पाया। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने गीतों में, अपने साहित्य में, अपने प्रवचनों में बार-बार इसी बात को दोहराया है। तनसिंह जी ईश्वर प्राप्त पुरुष थे और जो ईश्वर प्राप्त पुरुष होते हैं वे स्वयं ईश्वर ही बन जाते हैं। इसीलिए रामचरितमानस में कहा गया है - जानत तुमहिं तुमहिं होइ जाई। हम सब कुछ गलतियां करते हैं और वे साधना के लिए बाधक बन जाती हैं। उन्हें दूर करने के लिए परमेश्वर से, तनसिंह जी से प्रार्थना करें। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

'मेरी साधना' के विभिन्न पड़ावों का विवेचन

उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान समास्या के सत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय श्री आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' पर चर्चा की गई जिसमें शिविरार्थियों को साधना के मार्ग में आने वाले विभिन्न पड़ावों से अवगत कराया गया। चर्चा के दौरान बताया गया कि अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्र होना साधना की पहली आवश्यकता है। हमारे सामने अन्य कई ध्येय आदर्श बन कर आएंगे जो तात्कालिक सफलता, सुंदरता, उच्चता आदि का प्रलोभन लिए हुए होंगे। उनकी ओर आकृष्ट होना लक्ष्य-भ्रष्ट होना है। जब हम अपने ध्येय के प्रति अनन्यता का भाव रखकर आगे बढ़ते हैं तब हमें अपने मार्ग के शत्रु और मित्रों की पहचान भी कर लेनी चाहिए। हमारा सबसे बड़ा शत्रु अहंकार है। इसका उत्पति स्थल कर्तृत्व की भावना है। इसलिए साधक को सदैव समर्पण की भावना से ही कार्य करना चाहिए। उसे ना तो अन्यों की निंदा करनी चाहिए और ना ही स्वयं की स्तुति में आनंदित होना चाहिए। स्वार्थ भी हमारी साधना का विकट शत्रु है जो हमें हमारे ध्येय से च्युत कर देता है। स्वार्थ को रूपांतरित कर सामाजिक महत्वाकांक्षा में मिलाना ही उस से छुटकारा पाने का उपाय है। कायरता और वीरता की परिभाषा को भी साधक को ठीक से समझ लेनी चाहिए। कृपणता, निंदा आदि कायरता की निशानियां हैं, वहीं उदारता, त्याग आदि वीरता के लक्षण हैं। साधक को वीरव्रती होने के साथ ही उत्साह से परिपूर्ण भी होना चाहिए। उत्साह हमारी साधना के जीवन-मंत्र और प्रबल प्रेरकशक्ति के रूप में कार्य करता है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

खेलों के मैदानों में पढ़ा जीवन का पाठ

श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन को स्वयंसेवक के जीवन में ढालने का सर्वाधिक प्रभावी एवं महत्वपूर्ण साधन यहां के न्यूनतम साधनों से खेले जा सकने वाले खेल हैं। उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिविरार्थियों को 14 पथकों में बांटकर प्रतिदिन तीन सत्रों में खेल खिलाए गए। प्रातः 5:45 से 7:30 बजे तक संघर्षप्रधान खेलों के माध्यम से अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ स्वयं को संघर्ष में झोंकने और फिर से नई ऊर्जा के साथ नए संघर्ष में जुटने का अभ्यास कराया गया। दोपहर के विश्राम के बाद बौद्धिक खेलों में मानसिक सजगता एवं दृढ़ता को पुष्ट करने वाले खेल खेले गए। शाम के सत्र में चुस्ती-फुर्ती और दौड़ वाले खेल हुए। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

बौद्धिक प्रवचनों में समझा संघदर्शन का सार

उच्च प्रशिक्षण शिविर में श्री क्षत्रिय युवक संघ के मूलभूत दर्शन से शिविरार्थियों को परिचित कराया जाता है जिससे वे संघ-साधना के आधारभूत सिद्धांतों को समझकर मार्ग में आने वाली कठिनाइयों व चुनौतियों को भली-भांति समझ सकें और संघ की संस्कारमयी कर्मप्रणाली की वैज्ञानिकता और सूक्ष्मता को जान सकें। पूज्य तनसिंह जी द्वारा शिविरों में दिए गए प्रवचनों को श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा द्वारा संकलित किया गया, वे ही संकलित प्रवचन शिविर में प्रतिदिन बौद्धिक के सत्र में अनुभवी शिक्षकों द्वारा समझाए जाते हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

चरित्रहीन व्यक्ति नेता बन सकता है; योद्धा, समाज सेवक या राष्ट्र सेवक नहीं: संरक्षक श्री

(देशभर में उत्साह से मनाई वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती)

जोधपुर

महाराणा प्रताप और अकबर के संघर्ष के दौरान हल्दीघाटी के अतिरिक्त भी कई छोटे-मोटे युद्ध हुए। ऐसे ही एक युद्ध में महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने विजय प्राप्त की और वह कुछ मुस्लिम युवतियों को वहां से बंदी बना कर ले आए। जब यह समाचार उन्होंने प्रताप को दिया तब उन्होंने क्रोध में आकर कहा कि धिक्कार है तुमको! जो लोग इस प्रकार के कार्य करते हैं, उनके क्षत्रिय होने को धिक्कार है। उन्होंने अमर सिंह को उन मुस्लिम युवतियों को स्वयं जाकर ससम्मान लौटाने और उनके परिवार वालों से क्षमा मांगने का आदेश दिया। विचार करें, ऐसा चरित्र जिसका होगा वह व्यक्ति अंदर से कितना मजबूत होगा। चरित्रहीन व्यक्ति नेता तो बन सकता है लेकिन वह कभी योद्धा नहीं बन सकता, समाजसेवक नहीं बन सकता, राष्ट्रसेवक नहीं बन सकता। जिसके अंदर स्वयं तम भरा हुआ है वह दूसरों को मार तो सकता है परंतु लोकसंग्रह नहीं कर सकता, लोक शिक्षण नहीं कर सकता। उसके लिए तो प्रताप जैसा मजबूत चरित्र चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ, जिस संस्था से मैं जुड़ा हुआ हूं, वह भी इसी चरित्र निर्माण की प्रक्रिया है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक श्री माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने जयपुर में सिरसी रोड पर महाराणा प्रताप जयंती की पूर्व संध्या पर 21 मई को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संसार का सबसे बड़ा ज्ञान यह है कि मैं कुछ नहीं जानता हूं। जिसे ज्ञान का अहंकार उत्पन्न हो जाता है वह सबसे बड़ा अज्ञानी है। ऐसे ही अज्ञानी लोग इस प्रकार की चर्चा करते हैं कि अकबर और प्रताप में से कौन महान है? यह चर्चा का विषय ही नहीं है। जो ट्रेसपासर है, जो लोगों की जमीन को, देश को आक्रमण करके हड़पना चाहता है, उन पर अत्याचार करके शासन करना चाहता है, वह महान कैसे हो सकता है? महान तो प्रताप ही है। प्रताप को पिता का प्रेम नहीं मिला, लेकिन उनकी माता ने उन्हें बनाया। शिवाजी और दुगार्दास जी जैसे महापुरुषों को भी उनकी माता ने बनाया। वे माताएं कितनी महान हैं जिन्होंने ऐसे रत्न भारतवर्ष को दिए जो सारे संसार के काम आए। आज संस्कारों की कमी से सब त्रस्त हैं। इस कमी को माता-पिता ही पूरी कर सकते हैं लेकिन माता-पिता स्वयं ही असंस्कारी हैं, सच्चरित्र नहीं हैं तो वे संतान को भी चरित्रवान नहीं बना सकते। इसलिए संस्कारित माता-पिता का निर्माण आवश्यक है। जो प्रौढ़ हो चुके हैं, उन्हें बदलना अत्यंत कठिन है। इसलिए आज के बालक-बालिकाएं जो कल के माता-पिता बनेंगे उन्हें संस्कारित करना ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कार्य करने वाली कुछ संस्थाओं में से श्री क्षत्रिय युवक संघ भी एक है। इनसे आप भी जुड़ें क्योंकि इसी में समाज और राष्ट्र का कल्याण निहित है। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि हम व्यक्तिगत हितों से समाज के हित को और समाज के हित से भी राष्ट्र के हित को अधिक महत्व दें। उनके जीवन से हमें यह भी संदेश मिलता है कि यदि सभी को साथ लेकर चलें तो हम दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति को भी हरा सकते हैं। आज भारत विरोधी ताकतें भारत के बढ़ते प्रभाव से परेशान होकर भारत को सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक रुप से कमजोर करने में लगी हुई है ऐसे में यह आवश्यक है कि हम सबको साथ लेकर इन ताकतों का विरोध करें और उनके प्रयासों को सफल न होने दें। उन्होंने सामाजिक संस्थाओं को साथ लेकर इतिहास के सही पुनर्लेखन की आवश्यकता भी जताई। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी ने कहा कि मेवाड़ के महाराणा प्रताप ही नहीं उनके घोड़े चेतक ने भी शत्रु की अधीनता स्वीकार नहीं की। राम प्रसाद नाम के मेवाड़ के हाथी ने भी मुगलों की सत्ता स्वीकार नहीं की। ऐसी मेवाड़ भूमि को नमन है। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा महाराणा प्रताप, झाला मन्ना और राव जयमल की स्मृति में डाक टिकट जारी करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। महाराणा प्रताप समारोह समिति जयपुर के संयोजक तथा कार्यक्रम के आयोजक प्रेम सिंह बनवासा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

जयपुर

पाली जिले में छोटी रानी में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त मनाये जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत महाराणा प्रताप की जयंती 22 मई को मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोड़ता ने कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ और पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया। दलपत सिंह गुड़ा केसर सिंह ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के बारे में बताते हुए इसे चरित्र निर्माण में उपयोगी बताया। सुमेरपुर विधायक जोराराम कुमावत ने महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष और त्याग की अमरगाथा के बारे में बताया। विधायक खुशवीर सिंह जोजावर ने महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया और कहा कि क्षत्रिय समाज सभी को साथ ले कर चलने वाला समाज है। उन्होंने इतिहास विकृतिकरण को रोकने की आवश्यकता भी जताई। संत भजनाराम ने क्षत्रिय कौम को सर्व समाज का नेतृत्व करने वाली कौम बताया। नाथू सिंह राठौड़, गोविंद सिंह छोटी रानी, विक्रम सिंह ने भी अपने विचार रखे। मंच संचालन पर्वत सिंह खिन्दरागाँव ने किया। दिग्विजय सिंह कोलीवाड़ा, अजय पाल सिंह गुड़ापृथ्वीराज, सुरेंद्र सिंह आखर आदि ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। आयोजन के दौरान भव्य शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया जो रानी गाँव से प्रताप बाजार, मुख्य बाजार, मोखमपुरा होते हुए रानी बस स्टैंड पर समाप्त हुई। कार्यक्रम में श्री राजपूत सेवा समिति के सदस्यों व श्री वेरावत युवा मण्डल छोटी रानी के सदस्यों का भी सहयोग रहा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। 21 मई की शाम को केकड़ी में श्री महाराणा प्रताप सर्किल अजमेर रोड़ पर प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में दीपोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमे 483 दीपक जलाकर प्रताप को याद किया गया। 22 मई को अजमेर रोड़ स्थित श्री महाराणा प्रताप सर्किल से वाहन रैली निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई जगदंबा छात्रावास पहुंची। इस दौरान पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष की पताकाएं भी समाजबंधुओं द्वारा फहराई गई। जगदंबा छात्रावास में स्थित मुख्य समारोह में अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। आयोजन श्री क्षत्रिय सभा केकड़ी व श्री राजपूत सभा के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। अजमेर में बोराणा स्थित खेड़ा के बालाजी स्थान पर प्रताप जयंती मनाई गई। शोभा यात्रा के साथ प्रारंभ कार्यक्रम में शिवराज सिंह पलाड़ा, शक्ति प्रताप सिंह पिपरोली, विश्वनाथ प्रताप सिंह रेटा, भगवत सिंह गोयला, गिरधर सिंह छाबड़िया, गोविंद सिंह देवरिया आदि उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया ने महाराणा के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला, साथ ही पूज्य श्री तनसिंह जी जन्मशताब्दी वर्ष के बारे में भी जानकारी दी। लूणी तहसील के चिंचड़ली गांव में महाराणा प्रताप की जयंती पर महाराणा प्रताप की भव्य अश्वारूढ़ प्रतिमा एवं राणा पूंजा जी की आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया गया। लूणी विधानसभा के पूर्व विधायक जोगाराम पटेल, पंचायत समिति लूणी के पूर्व प्रधान वीरेंद्र प्रताप सिंह पाल, ज्ञान सिंह, सुरेंद्र सिंह ईन्दा जोलियाली, राम प्रताप सिंह पाल, पूर्व सरपंच हेम सिंह प्रतिहार सहित सैकड़ों की संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के शेरगढ़ प्रांत प्रमुख भैरू सिंह बेलवा ने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। हेम सिंह भाटी ने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। फरीदाबाद में राजकुल सांस्कृतिक संस्था द्वारा सैक्टर 8 में स्थित महाराणा प्रताप भवन में भी महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में फरीदाबाद शहर के सभी राजपूत संगठनों के अध्यक्ष और सदस्यों के साथ ही स्थानीय समाजबंधुओं द्वारा उपस्थित रहकर प्रताप को पुष्पांजलि अर्पित की गई। नारायण सिंह पांडोराई ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में संक्षिप्त जानकारी देते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में हो रही सांघिक गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने 28 जनवरी 2024 को दिल्ली में श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी की 100वीं जयंती पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का भी सभी से निवेदन किया। समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं को दसवीं और बारहवीं की कक्षा में 85% से अधिक अंक प्राप्त करने पर सम्मानित भी किया गया और प्रोत्साहित करने के लिए अजेय योद्धा महाराणा कुम्भा का चित्र भेंट किया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बैंगलुरू

संपादकीय

भ्रांतिपूर्ण पहचान है झगड़ों का कारण

इस संसार में हम जिस ओर देखें, वहां झगड़े ही दिखाई देते हैं, विशेषतः इस युग में। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच, जाति-जाति के बीच, पंथों, राष्ट्रों, संस्थाओं आदि के बीच झगड़े चलते ही रहते हैं। कहीं ये झगड़े हिंसक और खुले रुप में होते हैं तो कहीं कुटिलता, चतुराई और षड्यंत्र द्वारा शीत युद्ध लड़े जाते हैं। सामान्यतया इन झगड़ों की जड़ में स्वार्थ और अहंकार ही कारण के रूप में दिखाई देते हैं लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो ये भी मूल कारण नहीं हैं। वास्तव में झगड़ा सदैव पहचान का होता है। व्यक्ति जिस रूप में अपनी पहचान निश्चित करता है, उस रूप के इतर सभी पहचानों से उसका संघर्ष या झगड़ा प्रारंभ हो जाता है। जितनी अधिक दृढ़ता व्यक्ति की अपनी पहचान के प्रति होगी, उतना ही दुर्धर्ष उसका अन्यों से संघर्ष होगा। स्वार्थ और अहंकार भी इस धारण की गई पहचान से ही जन्म लेते हैं। उदाहरणतः व्यक्ति जब अपने वैयक्तिक स्वरूप के साथ अपनी पहचान को दृढ़ता से पकड़ लेता है तो अपने अतिरिक्त सभी से उसका संघर्ष प्रारंभ हो जाता है, भले ही वे स्वयं के परिजन ही क्यों न हो। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ की प्रतिमूर्ति बन जाता है, उसका जीवन तुच्छता से भर जाता है और वर्तमान में ऐसे उदाहरण बहुतायत में दिखाई देते हैं। इसी प्रकार अपने परिवार से अपनी पहचान को निर्धारित करने वाला व्यक्ति अपने परिवार के लिए तो खूब त्याग और समर्पण के साथ कार्य करता है लेकिन परिवार के प्रति उसकी आसक्ति अन्य परिवारों से ईर्ष्या भरी होड़ में बदलकर संघर्ष को जन्म देती है। इसी तरह अपनी जातीय पहचान को कट्टरता से अपनाने वाले अन्य जातियों के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संघर्ष में प्रवृत्त होते हैं। ऐसा ही पंथीय और राष्ट्रीय पहचान के साथ भी होता है। संस्थाओं के साथ अपनी पहचान स्थापित करने वाले भी अक्सर अन्य संस्थाओं की आलोचना और विरोध करके अपनी संस्था को श्रेष्ठ सिद्ध करने के झगड़ों में फंसे दिखाई देते हैं। इस दृष्टिकोण से व्यक्ति द्वारा धारण की गई पहचान ही समस्त झगड़ों की जड़ दिखाई देती है।

तो क्या उपरोक्त विवेचन का अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति द्वारा किसी भी प्रकार की पहचान को अंगीकार ही न किया जाए? क्या व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को आकार न दे, क्या वह अपने परिवार से संबद्धता न रखे, क्या वह जातीय जीवन की श्रृंखला की कड़ी के रूप में उस जाति की विशिष्ट परंपरा और संस्कृति को धारण न करे, क्या वह अपने गांव, अपनी मातृभूमि, अपने राष्ट्र से अपनत्व न रखे? नहीं, इसका यह अर्थ कदापि नहीं। उपरोक्त सभी पहचानें तो मानव जीवन का अनिवार्य अंग हैं और इनके अभाव में व्यक्ति का जीवन पशुवत बन जाएगा, यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। पहचानों को समाप्त करके एकता लाने का अवैज्ञानिक व अव्यावहारिक प्रयास कई व्यक्ति, संस्थाएं आदि करते रहे हैं, अब भी कर रहे हैं, लेकिन प्राकृतिक नियमों के विपरीत उनके ये प्रयत्न कभी सफल न तो हुए, न ही हो सकते हैं बल्कि इन प्रयासों से वे सामाजिक ताने-बाने को कमजोर ही कर रहे हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि पहचान ही सारे झगड़ों का मूल कारण है और पहचान के बिना जीवन-व्यवहार भी संभव नहीं है तो फिर उपाय क्या है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हमें पहचान की अवधारणा को ठीक से समझना आवश्यक है। पहचान के सृजन का मूल कारण प्रकृति की विविधता है। यह सृष्टि अपने स्थूल और बाह्य स्वरूप में इतनी अधिक विविधता लिए हुए है कि उस विविधता को वर्गीकृत किए बिना जीवन के सामान्य व्यवहार सफलतापूर्वक निभ नहीं सकते। इस दृष्टिकोण से पहचान मानव द्वारा प्रकृति गत विविधता को समायोजित करने के लिए अपनाया गया अनुकूलन है। इसलिए विभिन्न प्रकार की पहचानों को धारण करना मनुष्य के लिए अनिवार्य ही नहीं उसके विकास के लिए आवश्यक भी है और इन पहचानों के विकास में ही समाज, जाति, राष्ट्र जैसी व्यवस्थाएं भी विकसित होकर मनुष्य के जीवन को और अधिक विकसित होने का आधार प्रदान करती है। स्पष्ट है कि पहचान अपने आप में बुरी नहीं है और विभिन्न पहचानों को धारण करना भी समस्या का कारण नहीं है।

समस्या का कारण है उपरोक्त विभिन्न पहचानों में से किसी पहचान को अपना वास्तविक स्वरूप मान लेना। यह एक भ्रांति ही है क्योंकि उक्त सभी पहचानें व्यक्ति अपने जन्म के साथ या उसके बाद धारण करता है इसलिए ये उसका वास्तविक स्वरूप नहीं हो सकती। जिस प्रकार शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण किए जाते हैं उसी प्रकार उपरोक्त पहचानें भी हमारे द्वारा धारण की जाती हैं या हमें वंशानुगत, सामाजिक या राष्ट्रीय परंपराओं द्वारा धारण करवाई जाती हैं। इन्हें अपना वास्तविक स्वरूप मानने की भ्रांति ही वह भूल है, जिसके कारण विभिन्न प्रकार की पहचानें आपसी झगड़ों की जड़ बन जाती हैं। इस भ्रांति के कारण ही पहचानों का टकराव होता है और इसके कारण ही इस तरह के प्रश्न उठाए जाते हैं कि तुम हिंदू हो या राजपूत? तुम अमुक धर्मावलंबी हो या भारतवासी? तुम्हारी जाति महान है या हमारी? इन सभी झगड़ों को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है - अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना और उस पहचान को ही अन्य सभी पहचानों का आधार बनाना। यह एकमात्र उपाय इसलिए है क्योंकि हमारे वास्तविक स्वरूप का स्रोत वही तत्व है जो इस सृष्टि का भी स्रोत है चाहे उसे चेतना, आत्मा, परमात्मा आदि कोई भी नाम दें। यही तात्विक एकता है। इस तात्विक एकता का अनुभव ही प्राकृतिक विविधता से समायोजित होने के लिए धारण की गई पहचानों को परस्पर पूरक बना सकता है और तभी इन पहचानों का आपसी संघर्ष समाप्त हो सकता है। जब हम अपने वास्तविक स्वरूप को जान लेते हैं तभी सही अर्थों में हम धारण की जाने वाली पहचानों का भी मर्म समझ पाते हैं। भारतीय संस्कृति में इसी कारण तात्विक एकता को सदैव आधारभूत महत्व दिया गया और उसी के आधार पर भारतीय दर्शन, धर्म, सामाजिक व्यवस्थाएं आदि विकसित हुई। तात्विक एकता की अनुभूति के कारण ही भारत समस्त विश्व में ज्ञान, धर्म और सत्य-साधना का केंद्र बना और भारत को गुरु के रूप में विश्व ने स्वीकार किया। इस एकत्व की अनुभूति के लुप्त होने से ही भेदभाव और पाखंड का बोलबाला भारत में हुआ और सच्ची भारतीयता का ह्रास हुआ। इसीलिए आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता तात्विक एकता की अनुभूति समाज में जागृत करने की है लेकिन अपनी आवरण रूपी पहचानों के झगड़ों में फंसे समाज में इस आवश्यकता को न समझा जा रहा है और न ही पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया जाता है कि हम अपने आप को पहचानें। लेकिन यह साधना का मार्ग है जिसमें आज के विपरीत वातावरण में व्यक्ति सहज ही प्रवृत्त नहीं होता, इसलिए संघ ने सामूहिक साधना का मार्ग चुना है जिससे हमारी साधना के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित हो सके। आएं, हम भी संघ की इस प्रक्रिया के अंग बनकर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की ओर अग्रसर हों, ताकि पहचानों के झगड़ों से त्रस्त संसार में सुख-शांति का संदेश लाने में हम भी सहयोगी बन सकें।

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखा का आयोजन

चित्तौड़गढ़ जिले में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन राधाकृष्ण वाटिका परिसर, बड़ी सादड़ी में 14 मई को किया गया। यज्ञ के साथ कार्यक्रम के प्रारंभ के पश्चात केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए कहा कि हम सब में क्षत्रियत्व जागृत हो, युवा पीढ़ी संस्कारवान बनें एवं क्षात्र धर्म का पालन करे, इसका प्रयास संघ कर रहा है। उन्होंने 18 जून 2023 को बड़ीसादड़ी में राजराणा झाला मन्ना के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम में सभी से सहभागी बनने का भी निवेदन किया। एडवोकेट रघुवीर सिंह,भगवत सिंह बड़ी सादड़ी, गणपत सिंह पारसोली, सूर्यभान सिंह बड़ी सादड़ी ने झाला मन्ना बलिदान दिवस की तैयारियों पर चर्चा करते हुए अपने विचार रखे। जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के

आनुषंगिक संगठनों श्री प्रताप फाउंडेशन, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन, श्री प्रताप युवा शक्ति आदि की जानकारी देते हुए ई.डब्ल्यू.एस. आरक्षण में संशोधन हेतु किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। कार्यक्रम में संघ साहित्य व जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त पताका का वितरण किया गया, साथ ही पथप्रेरक व संघशक्ति के सदस्य भी बनाए गए। स्वामी अड़गड़ानंद जी कृत यथार्थ गीता पुस्तक भी उपस्थित जनों को भेंट की गई। कार्यक्रम में स्वयंसेवक व स्थानीय समाजबंधु सम्मिलित हुए।

पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त संघ-साहित्य का वितरण : गुजरात में बनासकांठा प्रांत में वडगाम में 14 मई को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त संघ-साहित्य का वितरण किया गया। इस दौरान समाजबंधुओं को जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी देकर दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह का निमंत्रण भी दिया गया। प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर प्रांत के सभी मंडल प्रमुखों सहित उपस्थित रहे।

हैदराबाद में निकाली संदेश यात्रा: पूज्य श्री तनसिंह जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त हैदराबाद में श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा संदेश यात्रा निकाली गई तथा समाजबंधुओं को दिल्ली में होने वाले मुख्य जन्म शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने हेतु आमंत्रित किया।

सबको साथ लेते हुए नेतृत्व प्रदान करना ही क्षात्रधर्म: सरवड़ी

हमारे पूर्वजों की महानता किसी से छिपी नहीं है। उन्हीं की महानता के कारण आज भी लोग हमारा इतना मान-सम्मान करते हैं। सभी यह मानते हैं कि क्षत्रिय समाज ऐसा समाज है जो सभी वर्गों को साथ लेकर चलता है, उनका नेतृत्व करता है। आज भी ऐसी कई ग्राम पंचायतें हैं जहां पर केवल एक ही क्षत्रिय परिवार निवास करता है परंतु वहां के लोग सर्वसम्मति से उसी परिवार के व्यक्ति को सरपंच बनाते हैं। इसका कारण यही है कि बहुत सी जातियां हमसे अपेक्षा करती है कि हम उनके दुख-दर्द में काम आएंगे। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबको साथ लेकर चलते हुए उन्हें नेतृत्व प्रदान करना ही क्षात्रधर्म है। उपर्युक्त बात श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने राजपूत विकास मंच जयपुर के तत्वावधान में क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान की 857वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पृथ्वीराज जी और जयचंद जी के बारे में अब तक अनेक ऐसी बातें प्रचलित थी जिन्हें नवीन ऐतिहासिक शोध ने गलत सिद्ध कर दिया है। हमें भी इन नई जानकारियों के साथ अपने आपको अद्यतन करते रहना चाहिए। साथ ही हमारे इतिहास को विकृत करने और हमारे महापुरुषों की पहचान बदलने का जो प्रयास किया जाता है, उसका विरोध करें। समाज के विरोध का ही परिणाम है कि शब्दकोश में से जयचंद जी का नाम गद्दार के पर्यायवाची से हटा दिया गया है। हमें हमारे महापुरुषों की जयंतियां भी मनानी होगी ताकि अन्य लोग उन पर दावा न कर सकें। हमारी एकता से ही हमारे समाज के विरुद्ध होने वाले ऐसे प्रयास रुक सकते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन भी सामाजिक एकता के निर्माण में सहायक हैं क्योंकि इन अवसरों पर साथ मिलकर बैठने और बात करने से समाज में परिवारिक भाव जागृत होता है। कालवाड रोड, हाथोज स्थित बी आर पैराडाइज में 16 मई को आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यशवर्धन सिंह झेरली, पार्षद दुर्गेश नंदिनी, नरेंद्रसिंह निमेड़ा, प्रेम सिंह बनवासा आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने पूरे भारत को एक साथ लाने का प्रयास किया था और इसीलिए 857 साल बाद भी हम उनको याद कर रहे हैं। क्षत्रिय इतिहास को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता रहा है। मोहम्मद बिन कासिम से लेकर गोरी तक 480 वर्ष का इतिहास कहीं नहीं मिलता है जहां राजपूत शासकों ने निरंतर संघर्ष करते हुए मुस्लिम आक्रांताओं को रोका था। वक्ताओं ने इस बात पर भी जोर दिया कि महाराजा जयचंद को गद्दार नहीं कहा जा सकता। यदि हम वास्तविक इतिहास को पढ़ते हैं तो ज्ञात होगा कि जयचंद धर्मप्रेमी सम्राट थे। पृथ्वीराज चौहान व जयचंद राठौड़ में कोई शत्रुता नहीं थी। जयचंद तराइन के युद्ध में तटस्थ रहे क्योंकि पृथ्वीराज ने उनसे कोई मदद नहीं मांगी थी। स्वयं जयचंद गोरी से लड़ते हुए चंदावर के युद्ध में काम आए थे इसलिए उन्हें गद्दार कहा जाना सर्वथा गलत है। कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में स्थानीय समाजबंधुओं व मातृशक्ति की उपस्थिति रही।

बरना (जैसलमेर) में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

जैसलमेर संभाग में खुहड़ी क्षेत्र के बरना गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 4 से 10 मई की अवधि में संपन्न हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने प्रथम दिन शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारा जीवन दीपक की भांति होना चाहिए जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करे। जिस प्रकार से एक दीपक की ज्योति घने अंधेरे को भी प्रकाशित कर देती है, उसी प्रकार हम भी संघ से मिले ज्ञान रूपी दीपक से अपने जीवन के अंधेरे को प्रकाशित करें। इन सात दिनों में यहां विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का अभ्यास करवाया जाएगा, लेकिन जीवन उसी का परिवर्तित होगा जो जागृत होकर पूरे मनोयोग से शिविर की गतिविधियों में भाग लेगा। स्वागत कार्यक्रम के दौरान संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए रणधा ने कहा कि संघ हमें अपने दायित्व का बोध कराता है। इस दायित्व बोध से ही व्यक्ति के जीवन में श्रेष्ठता आती है। आपको यहां जो कुछ ज्ञान मिला है उसे अपने आचरण में उतार कर समाज में आगे भी प्रसारित करना है जिससे पूज्य तन सिंह जी का संदेश सभी तक पहुंच सके। किसी भी तरह की निराशा अपने जीवन में ना आने दें और सदैव कर्मरत रहें। शिविर में जैसलमेर के अतिरिक्त जोधपुर, बाड़मेर और चित्तौड़गढ़ जिलों के स्वयंसेवकों ने भी प्रशिक्षण लिया।

क्षत्रिय कर्मचारियों का दो दिवसीय स्नेहमिलन संपन्न

क्षत्रिय कर्मचारी कल्याण समिति जालोर के तत्वावधान में दो दिवसीय जिला स्तरीय कर्मचारी स्नेहमिलन भीनमाल के निकट सुंधामाता तीर्थ स्थान पर आयोजित हुआ। 13-14 मई को आयोजित कार्यक्रम के प्रथम सत्र में सभी कर्मचारियों ने आपस में परिचय किया। पहले दिन के रात्रिकालीन सत्र में 'कर्मचारी वर्ग की समस्याएं एवं उनके समाधान' विषय पर चर्चा हुई। दूसरे दिन के प्रथम सत्र में कर्मचारियों के सामाजिक दायित्व के संबंध में चर्चा की गई। सभी प्रतिभागियों ने उपरोक्त विषयों पर अपने विचार रखते हुए एकजुट होकर समाज हित में कार्य करने की बात कही। अंतिम सत्र में आयोजित मुख्य कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रानीवाड़ा विधायक नारायण सिंह देवल ने कहा कि कर्मचारी वर्ग समाज का अग्रणी वर्ग है अतः आप सभी को समाज की भावी पीढ़ी विशेष तौर पर बालिकाओं की शिक्षा के लिए कार्य करना चाहिए। पूर्व विधायक डॉ. समरजीत सिंह ने कहा कि शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों को भी उतना ही महत्व देना आवश्यक है जिससे एक संस्कारवान व सुशिक्षित पीढ़ी तैयार हो सके। हिंदू सिंह चौहान, मुलेंद्र सिंह चंपावत, शेर सिंह चौहान, कमल सिंह काबावत, शैतान सिंह, छैल सिंह रतनपुर, गोपाल सिंह करड़ा सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। समिति के जिलाध्यक्ष दशरथ सिंह बालोत संस्था के पदाधिकारियों सहित उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जालोर संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी भी अन्य सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। संचालन रेवत सिंह जाखड़ी ने किया। कार्यक्रम के दौरान विगत वर्ष जालोर जिले से राजकीय सेवा में चयनित होने वाले समाज के युवाओं को सम्मानित भी किया गया। जालोर शहर में बनने वाले वीरमदेव बालिका राजपूत छात्रावास हेतु आर्थिक सहयोग भी समाजबंधुओं द्वारा प्रदान किया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
02.	दम्पति (शिविर)	08.06.2023 से 11.06.2023 तक	**आलोक आश्रम, बाड़मेर।** 1. दम्पति में से किसी एक के श्री क्ष.यु.सं. का शिविर किया हुआ हो। 2. महिला व पुरुष दोनों के लिए गणवेश आवश्यक है। 3. शिविर फीस 100/- (प्रति व्यक्ति) रुपए व भोजन शुल्क 150/- रुपए (प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन) शिविर में देय है। 4. 8 जून को सुबह 8.00 बजे तक पहुंचें। 5. आने वाले 10 मई तक शिविर कार्यालय को सूचित करें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ दो का शेष) जयपुर के भवानी निकेतन में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

साधना पथ... ऐसी स्थिति में साधक को हमारे साधनापथ में निहित अष्टांग योग के सभी अंगों यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अभ्यास स्वतः होने लगता है। साधना के अग्रेतर चरणों में साधक में मानव जीवन की अखंडता, निरपेक्ष नैतिक मूल्यों, मानव जीवन की एकता व पवित्रता, विश्व व्यवस्था और मानव जीवन की पूर्णता के प्रति गहरी श्रद्धा का जागरण होता है। साधक कौटुंबीय जीवन में निष्कपटता और कृतज्ञता धारण करता है। उसमें एक अखंड जिज्ञासा का आविर्भाव होता है जो परिपक्व धैर्य के साथ मिलकर साधक को सत्य के सतत शोधन की प्रेरणा देती है। ज्ञान के अहंकार को त्याग कर उत्तरदायी बनने पर साधक में निष्काम अभीप्सा जागृत होती है। इस अभीप्सा को जब विश्वास का भोजन मिलता है तब वह विकसित होकर साधक को निरपेक्ष आत्मसमर्पण की क्षमता प्रदान करती है। अब साधक समष्टि के सर्वथा अनुकूल होने के साथ ही सभी प्रतिकूलताओं का त्याग भी करता है। इसी तरह से निरंतर और नियमित साधना करते हुए साधक आत्मोद्घाटन और समर्पण भाव के द्वारा अपने लोक संग्रह को योग में रूपांतरित करता है जिससे वह परम आदेश को सुनने की नीरव अवस्था को प्राप्त होता है जो हमारी साधना की अंतिम मंजिल है।

अर्थबोध... 26 मई को 'अरमानों की दुनिया' गीत के माध्यम से समझाया गया कि हमारा संकल्प मार्ग में आने वाली समस्त बाधाओं से अधिक मजबूत होना चाहिए। 27 मई को 'कहो चुकाई' गीत के माध्यम से हमारे गौरवमयी इतिहास की झलक दिखाई गई। 28 मई को 'प्यासे प्राणों की ज्योति' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि हमारे प्रेरक का सर्वात्मना अनुसरण करना ही मंजिल तक पहुंचने का निरापद मार्ग है।

प्रभात संदेश... 21 मई: श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर में मुख्य बात जागरण की है। जागरण की यह बात बार-बार इसीलिए दोहराई जाती है, क्योंकि हम जागृत नहीं हैं। हम समझते हैं कि हम जागे हुए हैं। यह एक भ्रांति है और इस भ्रांति के कारण ही हम सत्य को ग्रहण नहीं कर पाते। जब तक यह भूल जारी है तब तक कहा नहीं जा सकता कि हम चल रहे हैं या भटक रहे हैं। जागृति आए बिना हम कर्तव्य पालन भी नहीं कर सकते। इसलिए संघ हमें शिविर में लाकर जगाने का उसी प्रकार प्रयास कर रहा है जिस प्रकार अर्जुन को जगाने के लिए भगवान श्री कृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया।

22 मई: शुचिता, पवित्रता, शुद्धताः यह भगवान की ओर बढ़ने की साधना का प्रथम सूत्र है। जिस प्रकार भगवान के मंदिर को शुद्ध रखा जाता है उसी प्रकार हमें अपने अंतःकरण को भी शुद्ध करना है। अरविंद ने कहा है कि हमारा शरीर जगन्नाथ का रथ है। इसलिए इसका सम्मान किया जाना चाहिए, इसमें अशुद्धि नहीं रहनी चाहिए। हमारे मन के भटकने से भी शुचिता नष्ट हो जाती है। हृदय के भाव दूषित होने पर भी शुद्धता नष्ट होती है। शिविर में हमारे शरीर, मन और हृदय की शुद्धि का अभ्यास कराया जाता है इसलिए जो बताया जा रहा है उसे मनोयोग से करें।

23 मई: मनुष्य जीवन भगवान द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य निधि है। इससे अपने कल्याण का मार्ग ढूंढते हुए संसार के कल्याण में लगाना है, इसी में शरीर की उपयोगिता है। संघ का कार्य करने के लिए भी शरीर, मन, बुद्धि और हृदय ही हमारे साधन है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा बीज रूप में लगाया गया श्री क्षत्रिय युवक संघ का पौधा धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा है, जिसकी छाया में हम सब विराजमान हैं। यह पौधा वटवृक्ष बन रहा है और हमको ही नहीं सारे संसार को अपनी छाया देने वाला है। संघ के इस विराट रूप के यदि हमें दर्शन करने हैं तो वह तभी संभव है जब हमारे हृदय के कपाट खुल जाए।

24 मई: क्षात्रधर्म का पालन शक्तिहीन व्यक्ति नहीं कर सकता। क्षात्रधर्म की साधना वस्तुतः शक्ति की साधना है। इसीलिए हम यहां बाहुबल, जनबल, आत्मबल, मनोबल आदि के रूप में विभिन्न शक्तियों का अर्जन करते हैं। क्षात्रधर्म के पालन के लिए ये सारी शक्तियां परम आवश्यक हैं। संघ अपने कदम अपनी क्षमता के अनुसार बढ़ा रहा है जिससे सनातन धर्म, राष्ट्र और मानवीय मूल्यों की रक्षा हो, संसार का कल्याण हो व मानव समाज की रक्षा हो।

25 मई: गीता में कहा गया है कि कर्म पर ही हमारा अधिकार है, फल पर नहीं। कर्म का त्याग भी नहीं करना है। निष्काम बनें। संघ की साधना निष्काम भाव की ही तपस्या है। इस मूल बात को समझने के लिए हमारे बाह्य जगत और अंतर जगत दोनों के सहयोग की आवश्यकता है और इन दोनों को बदलने की भी आवश्यकता है। कामनाओं के त्याग से ही हमारा जीवन पवित्र बनेगा। यदि कामनाओं की पूर्ति में लगे रहे तो ये कभी पूरी नहीं होती और जीवन व्यर्थ ही चला जाता है।

26 मई: समस्त विपरीत परिस्थितियों को भी ध्येयनिष्ठ व्यक्ति अपने तप से अनुकूल बना लेते हैं। महात्मा बुद्ध महावीर स्वामी भगवान राम भगवान श्रीकृष्ण इन सभी ने तपस्या का साधना का मार्ग अपनाया हम भी यहां ऐसा ही एक तप कर रहे हैं प्रकृति की परीक्षाओं के बीच भी हम विचलित नहीं हुए यह आपके तपस्वी होने का प्रमाण है।

मेरी साधना... साधना का आधार अभ्यास है क्योंकि अभ्यास से ही शरीर, मन और आत्मा को संस्कारों के सांचे में ढाला जा सकता है, साथ ही हमारी साधना के अनुकूल वातावरण का निर्माण भी आवश्यक है। उपरोक्त सभी आवश्यकताएं पूरी होने पर ही साधना का बीजारोपण हमारे हृदय में होता है। यह भी बताया गया कि साधक को रूप, रस, राग, गंध और स्पर्श के प्रलोभनों से सावधान रहना चाहिए, अपने मन को नियंत्रित रखना चाहिए। धैर्य, तपस्या, दृढ़ संकल्प, संयम, स्थिरता, ध्येयनिष्ठा, साहस आदि ही साधक के वे गुण हैं जो उसे साधना के मार्ग पर निरंतर गतिमान रखते हैं। सभी प्रकार की आसक्तियों का त्याग करके कर्तव्य पथ पर निरंतर बढ़ना ही साधक का लक्षण है। हमारी साधना बलिदान की मांग करती है। बिना बलिदान के क्षात्रधर्म पालन संभव ही नहीं है। अपनी ममता पर विजय पाना शत्रु पर विजय पाने से भी अधिक कठिन होता है, इस सत्य को साधक को प्रारंभ में ही समझ लेना चाहिए, अन्यथा उसकी ममता उसे उसके मार्ग से भटका भी सकती है। अपनी ममता को जीतने के लिए साधक को हठव्रती बनना पड़ेगा। शिविरार्थियों को हमारे राष्ट्र की, समाज की और संस्कृति की वर्तमान स्थिति से अवगत कराते हुए बताया गया कि राष्ट्र यज्ञ की क्षीण पड़ती ज्वाला को अपने सर्वस्व की आहुति देकर ही पुनः प्रबल किया जा सकता है। हमारे साधना मार्ग पर साथ चलने वाला ही हमारा सच्चा साथी है। जो अंत तक साथ न दे सके उनके प्रति अपनी आसक्ति का साधक को त्याग कर देना चाहिए। साधना के मार्ग पर अपनों और परायों का विरोध भी स्वाभाविक है। यह विरोध सैद्धांतिक धरातल पर ना होकर आत्म लघुत्व की हीन भावना से जन्मा हुआ होता है। ऐसे विरोध की साधक को कभी चिंता नहीं करनी चाहिए। हमारे वे विरोधी जो हमसे हमारे इतिहास, संस्कृति और चेतना को छीनना चाहते हैं उनके विरुद्ध साधक को अपने आत्मसंकल्प से काम लेना चाहिए। साधक की अंतमुर्खी साधना ऐसी अजेय और अखंड शक्ति को निर्मित करती है, जिसे किसी भी प्रकार के प्रदर्शन की कोई आवश्यकता नहीं होती। सामान्य लोग ऐसी साधना को पहचान नहीं पाते और पहचान भी लें तो धारण नहीं कर सकते। केवल साधक श्रेणी के व्यक्ति से ही यह साधना संभव है। आगे बताया गया कि साधना मार्ग पर साधक को निराशा के क्षणों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में साधक को अपनी युक्ति और बुद्धि का सामंजस्य करके मार्ग निकालना चाहिए। त्याग और संघर्षशीलता हमारी साधना के प्राण हैं। साधक को पराजय से भी कभी भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि साधना के लंबे मार्ग पर अनेक असफलताओं का सामना उसे करना पड़ता है लेकिन हर बार नए उत्साह से पुनः संघर्ष में जुट जाना ही साधक के लिए श्रेय मार्ग है। प्रयत्न और पुरुषार्थ ही पराजय को विजय में बदलने की सामर्थ्य रखते हैं। साधक को अपने शरीर, मन और आत्मा को सांचे में ढालना पड़ता है। अपनी साधना के शत्रु के प्रति प्रतिशोध का भाव भी साधक में होना आवश्यक है। हमारी साधना से इतर विचार प्रणाली अपरिपक्व साधक को अपनी ओर आकर्षित कर सकती है इसलिए श्रवण और मनन द्वारा अपने आपको सदैव स्थिर रखना आवश्यक है। पूर्ण निष्ठा से कर्मरत साधक पर ही ईश्वर की कृपा होती है। साधक को यह सत्य भी समझना आवश्यक है कि जब तक वह साधना में गतिमान रहेगा तभी तक उसकी उपयोगिता बनी रहेगी। जिस प्रकार बुझा हुआ दीपक निरूपयोगी हो जाता है, साधना मार्ग से च्युत साधक की भी वही गति होती है। अपना सर्वस्व अर्पित करके भी साधना-दीप को सदैव जलाए रखने वाला साधक ही अपने लक्ष्य तक पहुंचता है और ऐसे साधक से ही अन्य साधकों को भी प्रेरणा मिलती है। ऐसे साधकों के संगठन से ही हमारी क्षात्र-परंपरा जीवन्त बनी रह सकती है। सफलता-असफलता में निर्लिप्त रहने वाले साधकों से ही अनंत और अखंड शक्ति का निर्माण होता है और इस शक्ति से ही नए समाज का निर्माण संभव है।

(पृष्ठ दो का शेष) जयपुर के भवानी निकेतन में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

खेलों.. खेलों के बाद पथक शिक्षकों द्वारा खेलों के पीछे छिपे हुए सिद्धांतों को चर्चा के दौरान स्पष्ट किया गया। बालिका शिविर में भी इसी प्रकार तीन सत्रों में बालिकाओं ने खेलों के माध्यम से अभ्यास किया गया।

बौद्धिक... 19 **मई को 'हमारा उद्देश्य और मार्ग'** विषय पर दिए बौद्धिक में बताया गया कि हमारे क्षत्रिय कुल में जन्म के पीछे सृष्टि के संचालक का विशेष हेतु है। वह हेतु ही हमारा उद्देश्य है और वह उद्देश्य है - क्षात्रधर्म का पालन। यही श्री क्षत्रिय युवक संघ का भी उद्देश्य है और उसे प्राप्त करने के लिए संघ ने सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली को मार्ग के रूप में अपनाया है। 20 **मई को 'लोकसंग्रह'** के बारे में कहा गया कि लोकसंग्रह जनबल को निर्मित करने का उपाय है। अपने उद्देश्य के अनुरूप संगठन का निर्माण करना ही लोकसंग्रह है। लोकसंग्रहकर्त्ता में ध्येयनिष्ठा और तपोबल का होना अनिवार्य है। 21 **मई को संघ की साधना के 'अधिकारी साधक'** के बारे में बताया गया कि उसमें रक्त की पवित्रता, स्वेच्छा, उत्साह, निर्दोष विनिमय, द्वेषरहितता और आकुतन की समानता की विशेषता होनी चाहिए। 22 **मई को 'जीवित समाज'** की कसौटियों के बारे में बताकर समाज की वर्तमान स्थिति का उन कसौटियों पर परीक्षण किया गया। ये कसौटियां हैं - स्वधर्म की मान्यता, सांस्कृतिक मान्यताएं, संवेदना, आत्मीयता, ज्ञान-पिपासा, नव निर्माण की भावना, मान बिंदुओं का आदर, महापुरुषों की परंपरा और प्रतिहिंसा की भावना। 23 **मई को 'हमारा ध्वज'** विषय पर बात करते हुए पूज्य केसरिया ध्वज की विशेषताओं के बारे में बताया गया। 24 **मई को 'अनुशासन'** का अर्थ बताते हुए कहा गया कि अनुशासन का अर्थ है हमारे से वरिष्ठ एवं श्रेष्ठ के पीछे चलना अथवा शासन के पीछे चलना। इस प्रकार के अनुशासन से ही संगठित शक्ति का निर्माण संभव होता है। 25 **मई को 'उत्तरदायित्व'** को समझाते हुए कहा गया कि मनुष्य को उत्तरदायित्व के निर्वहन की प्रेरणा कृतज्ञता के भाव से ही प्राप्त होती है। अपने परिवार, समाज और सहयोगियों के प्रति कृतज्ञ होना और उस कृतज्ञता को व्यवहार द्वारा प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। 26 **मई को 'हमारी संस्कृति'** विषय पर बौद्धिक में भारतीय और क्षत्रिय संस्कृति की विशेषताओं के बारे में बताया गया। 27 **मई को 'हमारा ऐतिहासिक अंतरावलोकन'** विषय पर बौद्धिक हुआ जिसमें हमारे गौरवशाली इतिहास और हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित आदर्शों के बारे में बताया गया। 28 **मई को 'नेतृत्व'** के बौद्धिक में बताया गया कि नेतृत्व अधिकार नहीं बल्कि एक गहन उत्तरदायित्व है और श्रेष्ठ अनुचरत्व ही श्रेष्ठ नेतृत्व के निर्माण की आधारभूमि है।

(पृष्ठ एक का शेष)

श्रेष्ठ बंधनों... क्षत्रिय इतिहास महान और गौरवशाली रहा है जिसे हम चाह कर भी भुला नहीं सकते। हमारे पूर्वजों की श्रेष्ठताएं हममें भी उतरें, इसीलिए यह शिविर लगाए जा रहे हैं। वीरता, भक्ति, ज्ञान, सुशासन, त्याग और बलिदान - किसी भी क्षेत्र में हमारे पूर्वजों का कोई सानी नहीं रहा। हमारे समाज की माताओं ने भी अपने आदर्श जीवन से इस इतिहास को बनाने में बराबर योगदान दिया। चाहे सीता माता हो, अनुसुइया हो, शैव्या हो, सावित्री, दमयंती, गार्गी, मैत्रेयी, हीरा दे, पन्नाधाय, पद्मावती, मदालसा, जसवंत दे और हाड़ी रानी हो, इन सभी ने अपने तपोबल और त्याग से समाज में आदर्श स्थापित किए। उन माताओं ने अपने आपको श्रेष्ठ बंधनों से बांधकर रखा था इसीलिए वे संसार के लिए आदर्श बनीं। लेकिन वर्तमान स्थिति क्या है? आज बंधनों को न मानने, उनसे आजाद होने की होड़ चल रही है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इस होड़ में सहभागी बनने से रोककर पुनः उन श्रेष्ठ बंधनों से बंधना सिखा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति, हमारी भारतीयता पर आज चारों ओर से आक्रमण हो रहा है। इस आक्रमण को रोकने के लिए नारी ही समाज को मजबूत बना सकती है। नारी जैसा अपनी संतान को बनाएगी वैसा ही समाज भी बनेगा। आज माताएं अपने संस्कारों को लेकर गंभीर नहीं हैं इसलिए संतान भी गंभीर नहीं है। संघ हमें इन सात दिनों तक अपने आपको संयमित और मर्यादित बनाने का अभ्यास करवाएगा, इसलिए यहां के नियमों का पूरे मनोयोग से अनुसरण करें। शिविर में राजस्थान व गुजरात की 200 से अधिक बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

संघ प्रेम... हम स्वयं को राजपूत, हिंदू या भारतवासी समझते हैं, यह पर्याप्त नहीं है। हमारा सृजन, पालन और रक्षण करने वाली सत्ता को ऐसी सीमित दृष्टि से नहीं समझा जा सकता। इसलिए अपने दायरों को बड़ा करें। क्षात्रधर्म भी किसी को शब्दों से समझाया नहीं जा सकता। हमारे जीवन में क्षात्रधर्म दिखना चाहिए, जैसे हमारे पूर्वजों के जीवन में दिखता रहा है। जो दूसरों के लिए जीता है, जो क्षय से बचाता है वही क्षत्रिय है। जिन्होंने समाज, राष्ट्र और धर्म के लिए अपने आप को समर्पित किया, उन्हीं पर समाज गर्व करता है। लेकिन आज कहां गए हमारे पूर्वजों के वे संस्कार और आदर्श? अपनी ही खेह में खो गए सब। उन्हें ढूंढ-ढूंढ कर पुनः संग्रह करना पड़ेगा। संघ का यही काम है। पूज्य श्री तनसिंह जी के लिखे गीतों में संघ का सार है। उस सार को समझने से संघ समझ में आ सकेगा। ग्यारह दिवसीय इस शिविर में इन सभी विषयों पर चचाएं होंगी कि जीवन का लक्ष्य क्या है, उसकी प्राप्ति का मार्ग क्या है, आदि। आप लोग जागरूक रहें, अपने आप को पहचानें। राजपूत, हिंदू आदि पहचान के झगड़ों में ना पड़ें। जीवन के वास्तविक लक्ष्य की पहचान करें। उन्होंने बताया कि हमारे शास्त्रों में जो ज्ञान है, वह जीवन में उतारने की चीज है। जब हमारे जीवन में धर्म का पदार्पण होता है और उस धर्म के अनुसार जब हम कर्म करने लगते हैं तभी हम कर्मयोगी बनते हैं। हमें भगवान श्री कृष्ण, श्री राम आदि महापुरुषों की भांति कर्म योगी बनना है। यह कष्टों को सहन करने से ही संभव है। इस कष्ट सहिष्णुता का अभ्यास भी आपको यहां करवाया जाएगा।

(पृष्ठ तीन का शेष)

चरित्रहीन व्यक्ति...

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रवासी व स्थानीय स्वयंसेवकों द्वारा हैदराबाद के संजीवैया पार्क में महाराणा प्रताप जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन गोपाल सिंह भिंयाड व विस्तार प्रमुख महेंद्र सिंह नौसर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में स्वयंसेवको को क्षात्र धर्म की पालना के लिए सभी कठिनाइयों को सहन करते हुए निरंतर बढ़ते रहने का संदेश दिया गया। सभी स्वयंसेवकों ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। कालु सिंह सुराणा ने महाराणा प्रताप का जीवन परिचय देते हुए उनके द्वारा लड़े गए युद्धों का वर्णन किया और कहा कि महाराणा प्रताप की विशेषताओं को हम अपने जीवन में उतारेंगे तभी एक क्षत्रिय होने का दायित्व पूरा कर पाएंगे। रतन सिंह खुडानिया, राम सिंह चारणीम, राजू सिंह, सतीश सिंह सहित अनेको समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। लोकेंद्र सिंह विजयापुर ने व्यवस्था में सहयोग किया। कर्नाटक के बेंगलुरु स्थित चामुंडा माता मंदिर में भी महाराणा प्रताप एवं पृथ्वीराज चौहान की जयंती संयुक्त रूप में मनाई गई। मुंबई प्रांत की तनेराज शाखा में महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गयी जिसमें सभी स्वयंसेवको ने महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। नेतसिंह चाबा ने महाराणा प्रताप का संक्षिप्त परिचय दिया। रामसिंह लेसुआ द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा लिखित होनहार के खेल पुस्तक के प्रकरण 'चेतक की समाधि से' का पठन किया गया।

देवीसिंह झलोड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह का परिचय दिया। कार्यक्रम में दक्षिण मुंबई के समाजबन्धु व स्वयंसेवक उपस्थित रहे। नारायण शाखा भायंदर में महाराणा प्रताप ओर पृथ्वीराज चौहान की जयंती संयुक्त रूप में मनाई गयी। गुजरात में बनासकांठा प्रान्त में शाखा स्तर पर वडगाम तहसील के मेमदपुर, भरकावाडा एवं धोता गाँवों में महाराणा प्रताप जयंती मनाई गई। राजनसिंह मेमदपुर, रामसिह धोता सकलाणा व अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर गुजरात में तीन स्थानों पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थापित की गई। अरावली जिले के मोडासा में श्री भारत विकास परिषद द्वारा विश्वराज सिंह मेवाड़ की उपस्थिति में प्रतिमा की स्थापना हुई। इस दौरान स्थानीय सांसद व अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। कच्छ तीर्थ कांडला में कच्छ जिला राजपूत समाज के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह जाडेजा की ओर से प्रतिमा स्थापित की गई। प्रद्युमन सिंह जाडेजा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। साणंद स्थित एकलिंग जी रोड पर भी महाराणा प्रताप की प्रतिमा स्थापित की गई। इस दौरान ध्रुव सिंह साणंद, जयवीर सिंह भावनगर, प्रदीप सिंह वाघेला, कनुभाई पटेल सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति एवं स्थानीय निवासी उपस्थित रहे। गुजरात की राजधानी गांधीनगर में सभी सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से प्रताप जयंती के उपलक्ष्य में शोभायात्रा निकाली गई जो सेक्टर-12 स्थित राजपूत सभा भवन से रवाना होकर शहर के मुख्य स्थानों से होते हुए पीथापुर स्थित महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पहुंची। यहां सभी ने प्रताप को पुष्पांजलि अर्पित की। कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह चूड़ासमा, सीजे चावड़ा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। गुजरात के खेड़ा में भी प्रताप जयंती मनाई गई। चितौड़गढ़ के कानोड़ में भी श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रताप जयंती मनाई गई जिसमें प्रताप चौराहे पर स्थित महाराणा प्रताप की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में भींडर प्रधान हरि सिंह सोनगरा, डूंगला उपप्रधान रणजीत सिंह सारंगदेवोत, पार्षद भवानी सिंह चौहान, जीएसएस अध्यक्ष शंकर सिंह सारंगदेवोत सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ शहर में मेवाड़ क्षत्रिय सेना ने अन्य सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर महाराणा प्रताप की जयंती मनाई एवं वाहन रैली का आयोजन किया। स्थानीय विधायक चंद्रभान सिंह आक्या कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जोधपुर के जय भवानी नगर में भी जयंती मनाई गई।

मनोहर सिंह नांदला का निधन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **मनोहर सिंह नांदला** का निधन 22.05.2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है और शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

मनोहर सिंह नांदला

माननीय संरक्षक श्री का जैसलमेर व बीकानेर प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 12 से 14 मई तक जैसलमेर व बीकानेर में प्रवास पर रहे। 12 मई को संरक्षक श्री जैसलमेर पहुंचे जहां स्थानीय संभागीय कार्यालय तनाश्रम में स्वयंसेवकों से भेंट की। उन्होंने प्रांत प्रमुखों से संभाग में चल रही सांघिक गतिविधियों की जानकारी ली एवं स्वयंसेवकों से चर्चा करते हुए कहा कि कर्तव्य पालन में हम निरंतर आगे कदम बढ़ाते रहें। हमें अपने दायित्व के प्रति गंभीर होकर कार्य करने की जरूरत है, क्योंकि समाज की हमसे बहुत अपेक्षाएं हैं। वे तभी पूरी होंगी जब हमारा कारवां चलता रहेगा। हमें ईश्वर ने मानव जीवन दिया है तो उसकी श्रेष्ठता को हम समझें। इस बात का ध्यान रखें कि हमारी उपयोगिता कहीं व्यर्थ न चली जाए। बैठक में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त संभाग में आयोजित होने वाले कार्यक्रम को लेकर चर्चा की गई एवं स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए। आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर एवं बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के संबंध में भी चर्चा हुई। संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने शताब्दी वर्ष के तहत वर्ष भर की कार्ययोजना के अनुरूप लिए गए दायित्व, सभी प्रांतों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों व अब तक आयोजित हुए प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी दी। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह तेजमालता, बाबू सिंह बेरसियाला, गोपाल सिंह रणधा, वीर सिंह शिवकर, नरपत सिंह चिराणा, बलवंत सिंह महणसर सहित स्थानीय स्वयंसेवक उपस्थित रहे। यहां रात्रि विश्राम के पश्चात माननीय संरक्षक श्री ने 13 मई को बीकानेर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में संरक्षक श्री ने रामदेवरा स्थित बाबा रामदेव मंदिर में पूजा-अर्चना की। इस दौरान केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत व जैसलमेर संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली साथ रहे। तत्पश्चात पोकरण में आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम में उपस्थित स्वयंसेवकों से भेंट की तथा रामदेवरा प्रांत प्रमुख अमर सिंह के निवास स्थान पर पहुंचकर स्थानीय बंधुओं से मुलाकात कर बीकानेर के लिए प्रस्थान किया। बीकानेर में माननीय संरक्षक श्री के सान्निध्य में 13 मई को सायं 6 बजे संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में बीकानेर जिले के राजपत्रित अधिकारियों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें 50 से अधिक अधिकारियों एवं स्वयंसेवको ने भाग लिया। संरक्षक श्री ने उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि एक आदर्श अधिकारी वही है जो अपने कर्तव्यों का पालन करे एवं जनता के अधिकारों की रक्षा करे। एक

अधिकारी आम जनता के बीच सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है इसलिये उसे अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी भेदभाव, ईर्ष्या अथवा अहंकार के सभी को समान रूप से देखते हुए करना चाहिये। राजेन्द्र सिंह आलसर ने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी, साथ ही भवानी निकेतन, जयपुर में होने वाले बालकों के उच्च प्रशिक्षण शिविर तथा बालिकाओं के माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर की भी सूचना दी गई। बैठक में सामजिक क्षेत्र में सम्भव योगदान तथा आपसी सहयोग पर चर्चा की गई एवं सभी अधिकारियों ने अपने अनुभव भी साझा किए। चर्चा में इस बात पर सभी ने सहमति जताई कि सामाजिक भाव सभी में होता है पर उस भाव को उचित मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ इस दायित्व को बखूबी निभा रहा है। 14 मई को झंझेऊ स्थित चिल्लाय माता मंदिर में शाखा मिलन माननीय संरक्षक श्री के सान्निध्य में रखा गया। यहां शाखा के बालक-बालिकाओं से परिचय के पश्चात उनसे चर्चा के दौरान संरक्षक श्री ने कहा कि शाखा व शिविर में मिलने वाला पवित्र वातावरण हमारे जीवन में बना रहे, इसके लिए सदैव संघ से जुड़े रहें। इसी से हमारे जीवन में सकारात्मकता का प्रसार होगा। कार्यक्रम के दौरान संरक्षक श्री ने श्रीडूंगरगढ़ क्षेत्र के स्वयंसेवकों से भी भेंट की। संभागप्रमुख रेवंतसिंह जाखासर अन्य सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सिविल सर्विस सेवा परीक्षा 2022 में चयनित हुई समाज की प्रतिभाएं

हाल ही में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित सिविल सेवा परीक्षा 2022 के परिणामों में समाज की अनेक प्रतिभाओं ने भी सफलता प्राप्त की है। उत्तरप्रदेश के प्रतापपुर (अयोध्या) की निवासी विदुषी सिंह पुत्री दीपेंद्र प्रताप सिंह ने सिविल सेवा परीक्षा 2022 में 13वां स्थान प्राप्त किया है। इनके पिता विद्युत विभाग में इंजीनियर तथा माता प्रधानाध्यापिका है। हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के गाँव निंबी की निवासी दिव्या तंवर पुत्री भरत सिंह तंवर भी 105वीं रैंक प्राप्त कर भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुई है। सामान्य परिवार से आने वाली दिव्या इससे पूर्व पिछले वर्ष भारतीय पुलिस सेवा में चयनित हुई थी तथा वर्तमान में मणिपुर में सहायक पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत है। अवनीश सिंह भी परीक्षा में 241वां स्थान प्राप्त करके आईपीएस के लिए चयनित हुए हैं। वे उत्तरप्रदेश के मिजार्पुर जिले के मूल निवासी हैं।

प्रतीक्षा सिंह पुत्री प्रेम बहादुर सिंह ने भी सिविल सेवा परीक्षा में 52वां स्थान प्राप्त किया है। वे धनैचा-मलखानपुर हनुमान गंज जिला प्रयागराज उत्तरप्रदेश की मूल निवासी है एवं पिछले वर्ष उत्तरप्रदेश पीसीएस की परीक्षा में चयनित होकर वर्तमान में शामली में एसडीएम के पद पर तैनात है ' इनके पिता वायुसेना से सेवानिवृत्त होने के बाद दिल्ली के सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं। पथप्रेरक परिवार इन सभी प्रतिभाओं को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

विदुषी शेखावत ने 12वीं कक्षा (कला वर्ग) में प्राप्त किया प्रथम स्थान

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा 12वीं कला वर्ग परीक्षा का परिणाम 25 मई को घोषित किया गया जिसमें सीकर के दूजोद गांव की निवासी विदुषी शेखावत ने 99.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया है। इनके पिता अजय सिंह शेखावत मध्यप्रदेश में ताज होटल में नौकरी करते हैं। परीक्षा की तैयारी के लिए वह एक वर्ष तक अपने पिता और अन्य संबंधियों व दोस्तों से नहीं मिली और अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाया। इसी प्रकार नागौर जिले की जायल तहसील के चुवाद गांव की निवासी निकिता कंवर पुत्री उम्मेद सिंह ने भी 12वीं कला वर्ग में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। पथप्रेरक परिवार दोनों बालिकाओं को उनकी सफलता के लिए बधाई प्रेषित करता है एवं उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता है।

प्रार्थना सभा का दृश्य
बालिका शिविर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (**दूरभाष: 2466353 व 2466387**) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org